

নাম - প্রতীক নাথ

ঠেণি - সর্ব বিজ্ঞান - ক

প্রাচীক নং: ৪৯

৫২



द्रूढीपत्र / विषय-सूचि

१। एकुणे फेक्याचिर ईतिहास ——————	७-४
२। 'लेखनवेद वन्माला योग्यतेव अधा डूलातिभा अटिभालि' ——————	६-९
३। कविता 'स्वर्घता' ——————	११
४। आमड़ वा.लाभाभा ——————	२०
५। छवि ओंका ——————	२२
६। शेष, ऊरन गडि ——————	२३
७। कविता 'नेता का वादा' ——————	१६
८। मातृभाषा ——————	२५
९। दृष्टिवेळा ——————	२१
१०। पाँच द्वापाल शम्भा ——————	२८-२९
११। लघुकथा 'चोह और सूत' ——————	२३
१२। धने मने ठांडेव पाठ्यात्र ——————	२५
१३। मिक्रो प्रमाण ——————	२६

"
ତୁମ୍ହାରା ଆଜ ତୀଣେ ତୁମ୍ହାରା ଆଜ ତୀଣେ ମୁକଳେ ଫେରୁଥୀରି-
ଆଜୋ ଡାଲିମେବୁ କାହାଗାରେ ମରେ ବୀରୁ ଦେଲେ ବୀରୁ ନାହିଁ
ଆମାର ଶାହୀଦ ଭାବେରୁ ଆଖା ଡାକେ
ତୀଣେ ମାନୁଧରୁ ସୁମୃଦ୍ଧ ଶାନ୍ତି ହାତି ମାଟେ ଯାଏ ବାଟେ
ମୀଳାଳ ଦ୍ରୋଦେବେ ଆଜୁନେ ଅବାର ଦୁଇବୋ ଫେରୁଥୀରି
ମୁକଳେ ଫେରୁଥୀରି ମୁକଳେ ଫେରୁଥୀରି ॥ "

- ଅମାର ଅଇଥର ବଂଠେ ରାଷ୍ଟ୍ରାଜ୍ୟ ନିର୍ମଳେ-
/ ଆମୁଲ ଗଭ୍ରରୁ ପିରୁଥୀରି (୨୩୫୨)





নিবন্ধ / প্রবন্ধ ...



২১শে ফেব্রুয়ারির ইতিবৃত্ত

“আমার গুরুজ্ঞের কথে রাঙানো একুশে ফেব্রুয়ারি
আমি কি তুলিতে পারি” - আব্দুল জফর চৌধুরী-১৯৭২

১৯৮৮ খ্রি- মাঝে এক বছর আগে ভারতৰ লাভ
করেছে আৱ স্বাধীনতা, তখন পাকিস্তান ঢিল ঢুটি ভাগে বিভক্ত;
পূৰ্ব পাকিস্তান ও পশ্চিম পাকিস্তান, পূৰ্ব পাকিস্তান যা বৰ্তমানে
বাংলাদেশ' নামে পৰিচিত, যেই অন্য হঠাত পাকিস্তান অৱকাশ
যোৱনা কৱল যে বাংলাদেশে উচ্চ ভাষাকে কৱতে হবে তাৰে
জাতীয় ভাষা, মাতৃভাষাকে রক্ষা কৱতে এবং ১৪৪ ধাৰা-কে প্রাণতে
ক্ষুণ্ণ হল ভাস্তুৰ অত্যাগ্রহ, দাকা-ৱ রাজস্থে কৰিবাৰ লাভ ও
কান্দানে গ্যাজ আভুক্ত পড়ল চান্দতৰজ্জেৱে উপৰ, আও অন্ড ভাস্তুৰা,
১৯৭২ খ্রি মালোৱ ২১শে ফেব্রুয়ারি, ৩৭ন বিকেল চারটি, হঠাত
চকা মেডিকেল কলেজৰে চাৰিমাশে গৱেষণা ঢিল প্রিলি গৰ্জন, মালান,
জাবৰ, বাফি ৩ বৰকত-পুৱ কথে যিন্তু হল মেডিকেল কলেজৰে
মথ, মাটিতে লুটিয়ে পড়ল চাৰ বীৱৰ রক্ষণ দেহ, তাৰ ভাস্তুৰে
অম্বানিত কৰাৰ জন্য ২৪শে ফেব্রুয়াৰী দাবায় তৈৰী হল প্ৰথম
শহীদ মিনার। পুলিশ যেই বাতেহ মিনারটি ধূলায় ছিপিয়ে দেয়, তাৰ
পৰে ঢিল স্বেৱাঘৰ, ২২শে ফেব্রুয়াৰি থেকে ক্ষুণ্ণ হল আৱও বড়
আন্দোলন, মহানগৰ ভাড়িয়ে আন্দোলন, ভাড়িয়ে পড়ল গ্রাম থেকে
প্ৰামাণ্যতৰে, তাতে যোৰ দিলেন বিভিন্ন কৰিব, মাতৃত্বিক ৩ বিশিষ্ট,
জনেৱা, ভাষাৰ জন্য আন্দোলন নিৰ্দিষ্ট, কীমানা পেৱিয়ে পৰিনত হল

জাতীয় আন্দোলনে,

শেষ পর্যন্ত ২৯ ফেব্রুয়ারি, ১৯৭৮ আলে বা, ০৮ ডাষা স্বীকৃতি
পেল বা, ০৮ লাদশের জাতীয় ডাষা হিসাবে, ১৯৭৭ আলে দ্বিতীয়
শহীদ মিনার তেরী ইল এই মিনারটি অস্থানভাবে তেরী হ্যান্ড, ১৯৭১-১
বা, ০৮ লাদশের স্বাধীনতার পর, অস্থানভাবে তেরী ইল উত্তীয় শহীদ
মিনার, মিনারটির চারটি স্তম্ভ, এই চার বীরের প্রতীক, তার এই অঙ্গে
আবও চারটি স্তম্ভ তাদের জ্ঞায়েদের প্রতীক ও রংয়েচে বা, ০৮ লাদশের
জ্যোতি প্রতিকার নাল, বুও চিহ্নিত।

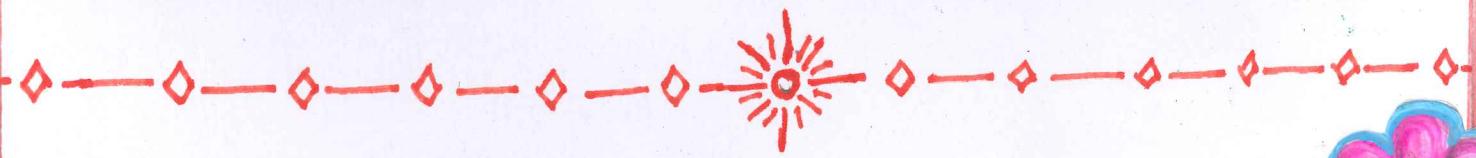
এই চার বীর মোনকের স্মৃতিতে, ১৯৮৮ আলে ইউনিফো ঘোষণা
কৰল যে ২১শে ফেব্রুয়ারি দিনটি পালিত হবে “আন্তর্জাতিক
মাতৃভাষা দিবস” হিসাবে,

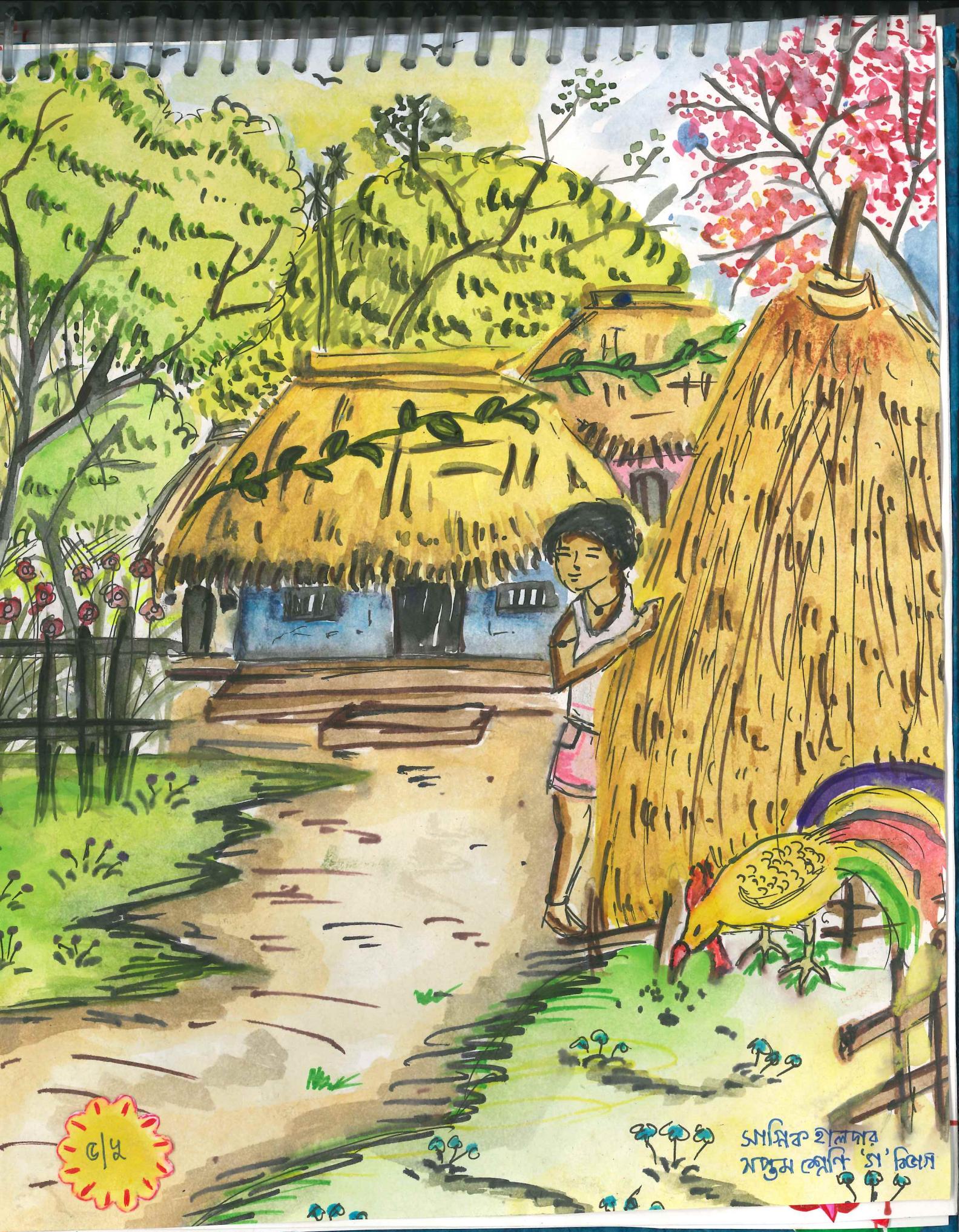
প্রজন্ম উল্লেখ্য আজানের বরাবর উপত্তক্যায় বা, ০৮ ডাষা
আন্দোলন হয় ১৯শে মে ১৯৬৯ আলে, অজামিয়া ডাষার অগ্রামনের
বিরুদ্ধে আজান অবকারের দমনের কারণে ১১ জন জারা যায় এই দিন,
বা, ০৮ ডাষার আন্দোলন যেই দেশ বালের টাঙ্কি পেয়িয়ে
এইভাবেই অনুপ্রেরণ জোগায় পৃথিবীর অনস্ত দেশের নাগরিকদের
তাদের মাতৃভাষায় কথা বলার, তাই ‘২১শে ফেব্রুয়ারি’ শুধুমাত্র বা, ০৮ লাদশে
বা বা, ০৮ ডাষাকে নিয়ে নয় আন্তর্জাতিক ডাষা দিবস হিসাবে স্বীকৃতি
পেল। —

“মোদের খব, মোদের আশা

আ ছারি বা, ০৮ ডাষা !” — অতুলপ্রয়াদ ঘোন

আযুষ্মান মাল্লিক
মানুম হোমি 'গ' বিণ্ডা





ତୁ

ମନ୍ଦିର ଶଲଦାର
ମଧୁମ ଜ୍ଞାନ 'ଟା' ଲିମା

‘ଶୈଳୀରେ ସଂକଳିତ ଯୋଗନେର ଅଧ୍ୟ-ତୁଳାନିଧୀ ଆୟୋଜନି’

ବନ୍ଦୀଯୁ ଯମାରେ ବାଲା ଭୋବ ଅବ୍ୟାନ ନିଯେ ବାଜାଲିର ଅଧ୍ୟ-ଅଷ୍ଟାବ୍ଦୀ
ଯେ ଭୋବତେବେର ଉତ୍ତମ ହାତେ, ତେବେ ଯୁଦ୍ଧ ବିଭାଗରେ
ମୁଖ୍ୟମୁଖ୍ୟ ରାଜବିହାରୀ ଜାହ୍ୟ ୧୯୪୭ ମାର୍ଚ୍ଚର-ଡିସେମ୍ବରେ ଭୋବ
ବିଭାଗ ଶୁଭ୍ୟ, ୧୯୪୮ ମାର୍ଚ୍ଚର ମାଟେ ଏ ନିଯେ ମୀରିତ ପର୍ଯ୍ୟାୟ
ଆଲୋଳନ ହୁଥ୍ ୧୯୫୦ ୧୯୫୨ ମାର୍ଚ୍ଚର ଏବୁକୋ ଫେବ୍ରୁଆରି ତଥା ଚରମ
ପ୍ରକାଶ ହାତେ।

ଏହୁକୋ ଫେବ୍ରୁଆରି ବାଜାଲି କ୍ରନ୍ତିନାରେ ଭୋବ ଆଲୋଳନର
ମର୍ମନ୍ତଦ ଓ ଜୌରବଜ୍ରଳ ମୁତିବିଭାଗିତ ଏହାର ଦିନ ହିମାବେ ଚିତ୍ରିତ
ହେଯେ ଆଦେ, ବାଲାକେ ପାକିସ୍ତାନେର ଅନ୍ୟତମ ରାଜ୍ୟଭାବ ବର୍ତ୍ତାର
ଦାରିତେ ୧୯୫୨ ମାର୍ଚ୍ଚର ଏହି ଦିନେ ଆଲୋଳନରତ ଦ୍ୱାରାଦେଇ ଉପର
ପୁଲିଶେର ମୁଲିପର୍ଦ୍ଦ ବହେବଜନ ତଥା ଶାହୀଦ ହନ, ତାହିଁ ଏ ଦିନରେ
ଶାହୀଦ ଦିବ୍ୟ ହିତରେ ହୁଥ୍ ଆଦେ ଚିତ୍ରିତ।

ଏହି ପ୍ରଯାୟେ ମରଣ କରେ ନେବ୍ରା ଥାବୁ ‘ମଧ୍ୟଗର ମରାଇ’
ପ୍ରବନ୍ଧେ ସହିତିଲାଖେ ଉପିକେ —

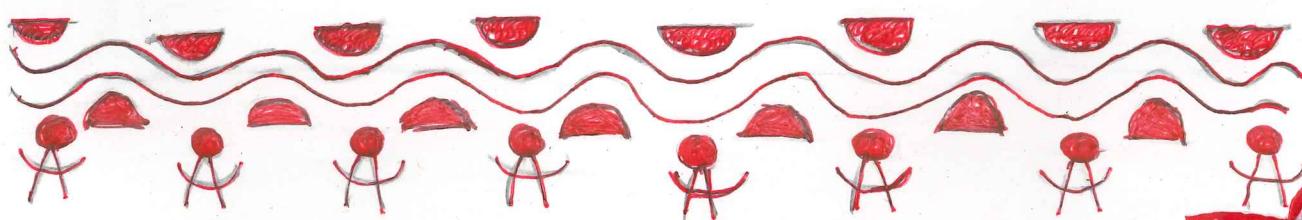
“ଦେଶ ଅନେକମାତ୍ର ମାନୁଷକେ ମେଳାତେ ପାରେ ନି, ବିର୍ଭାଗ ପାରେ
ନି, ବିନ୍ଦୁ କୁଞ୍ଚାତି ମାନୁଷକେ ଅନେକ ଯମାଥେଇ ମିଲିଯେ
ଦିପ୍ରଦେଶେ । ”

ବନ୍ଦୀଯୁ ଏହୁକୋ ଫେବ୍ରୁଆରି ମେହି ମାର୍କ୍ଷାତିକ ମିଲାର ଦ୍ୱାରାଦେଇ ସ୍ଥଳ
ବାରେଦେଶେ, ଏ ଦିଲ ଏଥିଦିନ ଶୁଦ୍ଧି ବାହନର ଭୋବ ଶାହୀଦ ଦିବ୍ୟ ଆ
ଆଜ୍ୟ ଦଶାର ଜାମ୍ବୁ, ଡୋବର ଜାମ୍ବୁର ବ୍ୟାବକାନ ଅତିକ୍ରମ ତଥା ଦୌର୍ଦେଶ
ଜ୍ଞାଦେ ବିଶ୍ୱର ଦରବାରେ, ଦେବପ୍ରେସ ଅନୁଭୂତିକ ମାତୃଭାବ ଦିବ୍ୟ

- ଏହି ଶିରୋପା,

୧୯୮୨ ମାର୍ଚ୍ଚିଆରେ ସିକୁଜୋ ଫେଲ୍‌ଗ୍ରାହି ଯେ ଚତେନୀଥ ଉଦ୍‌ଦୀପିତ
ହେଁ, ମାଞ୍ଚାଲିକା ରଙ୍ଗ ଦିଅେ ମାତୃଭାଷାକେ ମୟୋଦ୍ଧାର ଆଯାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ
କରେଛିଲ, ଅଜା ଓ ଦେଶେର ଜାତି ଦାଖିଲେ ଆନ୍ତର୍ଜ୍ଞାତିକ
ମାନୁଦ୍ୱାରେ ଜାହ ଥେବେ ଶ୍ରୀକୃତି ଲାଭ କରେଛେ । ଐନ୍‌ଡିଲିଙ୍ ପିମା ଅନ୍ତିମ
ବାବେ ମାନୁଧେ ମନବିକ ଚତେନା ଯେ ସିର୍ବେ ଦିଅେଇ କର ପୂରେ ।

ପ୍ରତିକ ମହା
ଭାଷା ଶ୍ରେଣି, 'କ' ବିଭାଗ





कविता / कविता...



स्वच्छता

मोदी जी ने कि शुरूआत,

हमसब मिलकर बढ़ाए दाय।

तुम भी मिल जाऊ मेरे साथ,

गंदगी की बना हो मनाय।

देश में उजियाली लाऊ,

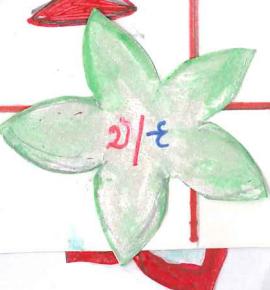
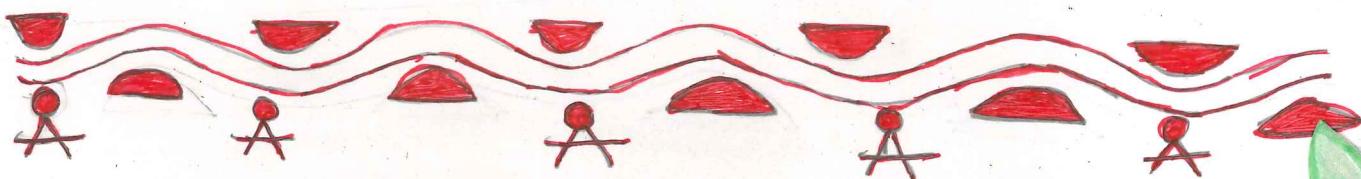
स्वच्छ रही और स्वच्छता बढ़ाऊ।

देश - देश गाँव - गाँव में करी प्रचार,

तदी भईंगी गंदगी का अत्याचार।

- VIVEK SINGH

7B



ଆମାର ଏଂଳା ଭାଷା

ଦୁମାଯୁ ପଥନେ ଅଜଟାନା କି ହେ ଆମଲେ ଶୁଣି,
ପାତ୍ର ଏହି ଆଗେ ହୃଦୟ ଏହି ଭାଷାର ଜୁଣି ।

ଭାଷାର ମହାର ପାହୁଣ୍ଡ ନା ଘାନୁଷ ଦିତେ ଭାବା,
ଭୁବନୀ ଓଥନ ଛିଲ ଗାଦେଇ କୁରୁଟି ଇକାବା ।
ମାନୁଷ ସଥନ ବଳତେ ଚାଯୁ, ବୁଝାଣେ ଚାଯୁ ନିଯେ ଅନେକ ଆଜା,
ଏକଟିଇ ଅଭବ ଛିଲ ଓଥନ ଗୋଟି କେବଳ ଭାଷା ।

କିମ୍ବା ତଥାନି ଲୁଣ ଯେନ ଭାଷାର କାନେର ଈଷ୍ଟ ଜୀନାବୁର
ଛିଲ ନା ଗାଦେଇ କେଇ ଆବିକ୍ଷାର ।

ଭାଷାର ଧାରା ମର୍ଜନୀ ଲୁଣ ଏହି ମଙ୍ଗୁ ଦୁନିଯା
ଆମାଦେଇ ଏଂଳା ଭାଷା ଅଗିରି ଅଦ୍ଵିତୀୟା ।

ଯୁକ୍ତିକୁ ଫେରି ଏହି ଏଂଳା ଭାଷା ଆମରା ଉତ୍ସବ ଜୁଣି ।
କେଇ ଭାଷା ଦିବ୍ସେବା ଦିନ ଏହୁକେ ଫେରୁଯାଇ ।

କୁମ୍ଭାଚିନ ମିଷ୍ଟି ମୁଦୁରୁ ଏହି ଯେ ଏଂଳା ଭାଷା
ତାର ଗୋ ବାଞ୍ଚାଲି ଆମରା ଝକ ଗରେ ହାଜା ।



ନିଲାର୍ଜ ମିଶ୍ର
ମହୀ ଶ୍ରେନି • କବିତାଜା



ছবি আঁকা

৪০ ডালোবাজি তাৰ্ত ডালোবাজি আঁকা

দাগড়ুলো চলে জোজা আৰু আঁকাবাবগ

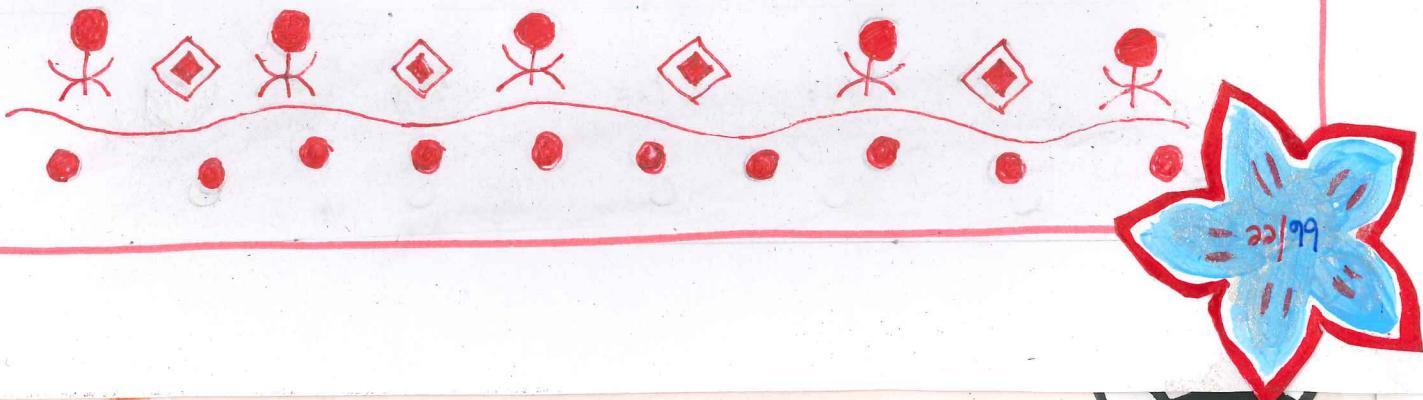
৪১ দিলে জেগে ওঠ হাল মাছ মাথি

চাকুমাতে যাই দেখি তাৰ ছবি আঁকি,

একটা দুঃহাতে মন ন্যূ পুকু

যুব মুক্তিল আঁকা আজু মানুষ,

অর্থন দাকা মুসী
ষষ্ঠি ক্লেনি-ক বিভাগ

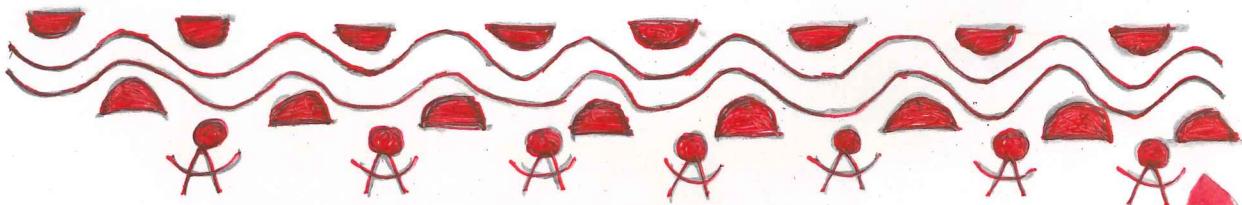




ଏମୋ, ଡୀବନ ଗଡ଼ି=

ଏମୋ ମୋରା ଲଡ଼ାଇ କବି
ଡୀବନ, ମନ ଗଡ଼ିଆ-ହୁଲି
ମୁଣ୍ଡ ଖଦେ ମରିଯେ ଆର୍ବାର,
ଦେବିଯେ ଲକ୍ଷ କୋଟି ଦିନ
ମୋରା ନାହିଁ ଅର ମନ୍ଦରୀନ
ବିଜ୍ଞାନ ଅତ ଶୈଖ ଉପହାର,
ଯାହା କିଛି ଅଛୁଟ, ସୁଧାତୁବ
ଅକଳୀର ଏହନ କବିବ ଦୂର-
ହିମ ବିଦ୍ୟୁତ୍ ଟୁଡ଼ିଆ ଯେବଳ
ଏମୋ ମବେ କବି ଇଲାଜାଲ
ଅନ୍ତରେ ବିଶୁଦ୍ଧ ମୁଣ୍ଡ ଆଲୋପ
ଶେଷ ଆତି ନିମଳ ପ୍ରତେତ ଉନ୍ଧୟ ॥

ଆମର ମୁଣ୍ଡାର୍କୁ
ଧୂର ଶୈଖ ନାବିଳେ



୨୩/୧୩



नैता का वादा

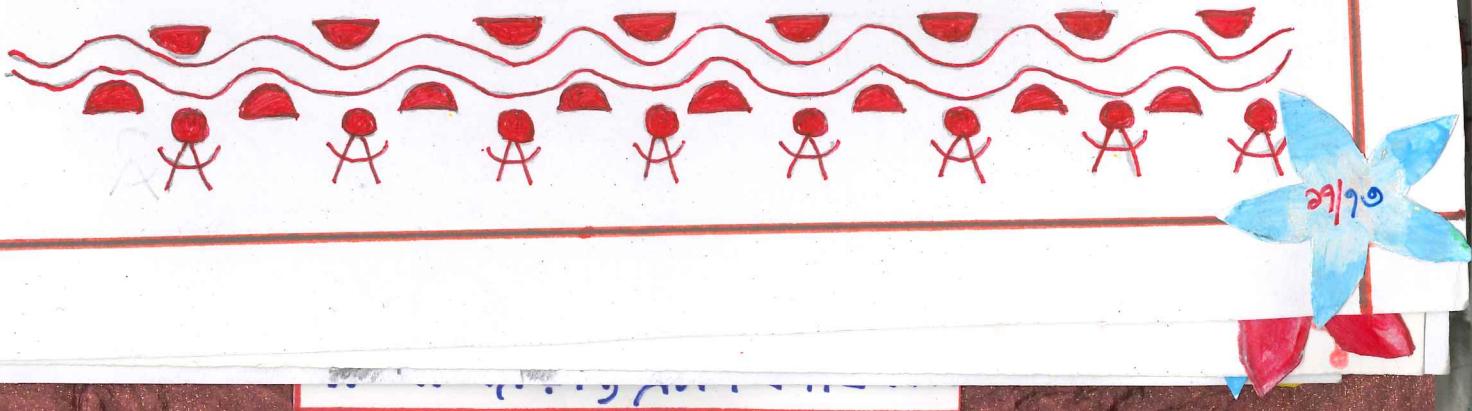
सच इन्सानों का क्या कहना
सब चाहते हैं आकर भारत में रहना
यह है मेरी वाणी,
कश्मीर से किया कुमारी
सबके घर में आएवा पानी |
ऐसा था तुम्हारा भारत का
जैवा किसी नैनसीचा
नहीं होने द्वारा गाँव-गाँव बाली-बाली में लोया |
साथ निशाना भारत वासी
उद्देश एवं निर्देश की फँसी |
मैं सज्जाप कर्कशा अपनी वाणी यह कहकर,
पूरे कर्कशा अपने वाटे चाहे,
हँसन के हो छुरे झूरोदे |

ବାହୁଦ୍ରାଷ୍ଟା

বাঁৰু আমাদেৱ জাতৃভাষা, বীঁৰু-ই হল প্রান;
বাঁৰু আমাদেৱ জাতৃভাষা, গব বাঁগলিৰ প্রান,
বাঁৰু কথা বলি আমৰা বলে বাঁগলি-ৱে;
বাঁৰু ভাষা প্রানেৱ ভত্তা, জাতৃভাষা ৬পঞ্চ,
ডি-ৰু-ই-হা আদিয় জানুৱেৱ কথা;
বুঝলাগ যে তো আমাদেৱই ভত্তা, বলতে ধাৰে না কথা,
জাতৃভাষা জায়েৱ ভাষা, জায়েৱ ভাষা ৱে;
বিশ্বাস আয়ে আমাদেৱ আহে বাঁবসন্ধয় ৱে ॥

ଦେବପୂର୍ଣ୍ଣ ମୁଣ୍ଡ ପ୍ରେସ୍, '୯' ବିଳାଜ







বৃষ্টিবেলা

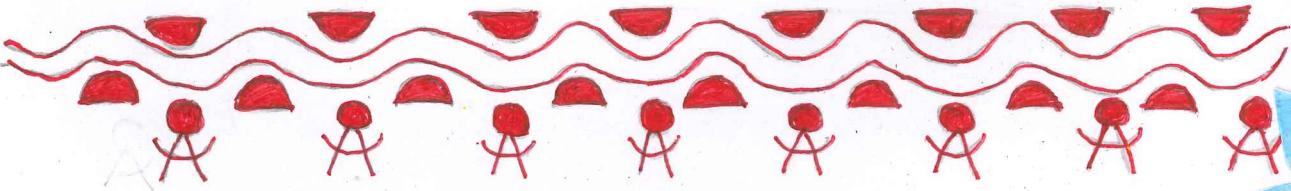
চান্দা হাত্যা বর্ষাচ্ছে যখন
মোঁজের চান্দাৰ জড়িয়ে তথন,
বৃষ্টি দেখার স্পন্দন ঘণ্টন।
কৈৰাই তথন পড়াশোনা।

জন্ম জলে নৌকা ভাঙা,
- জেটা আমাৰ ছেঁচি বেলা।
এখন দিন অন্যৰ কষু,
বৃষ্টি ডিজে সুলে মাত্যাম,
বেহুনকোট, ভাৱী ব্যাগ
আৰ হাতাৰ বেঁকা,
অচয় নেই, ক্ষয় না' তাৰি বৃষ্টি দেখা।

নৰ্ষিলে বজে অঞ্চ কষা,
মুজেৰ মাঝে জু যে
কৈছ হারিয়ে মাত্যাম,
ফ়েলে আজু বৃষ্টিবেলা।

কৈছ জন্ম জলে লায়িয়ে পড়া,
নৌকা ছেঁড়ে চৰজা দেখা—
সাতন হুল অঞ্চ তুলে,
মাত্যার কাঞ্জ কানজোলা।
কোথায় ফেল আমাৰ মাঝেৰ বৃষ্টিবেলা।

কৈবল ভট্টাচার্য
মৰ্ম্ম শ্ৰেণী, বিভাগ-'গ'।





ପାତୁ ଗୋପାଳ ଶର୍ମା

ପାତୁ ଗୋପାଳ ଶର୍ମା,
ଦେଖ ଛିଲ ତାର ବଜା,
ଏହି ଦେଖେଟେ ଏହ୍ୟ,
ନଚେଚେ ସମ୍ଯାନ୍ତ୍ରାଦେଖେ,
ଲୋକଙ୍ଗଜନ ନେଇ ଚେନା,
ରାନ୍ଧାଘାଟେ ଖେଳନା,
ଗଞ୍ଜା ପାଇଁ ବର୍ଷେ,
ଭୋବରେ ଅବଶେଷ୍ଠ —
କେଗଥାୟ ଧାବ, କିବା ଧାବ,
କେମନ କରେ ଅବାର ମାଥେ କଥା କର,
ଭୋବନା ନିଯୋ ଖାଦ୍ୟ କୁରୁ,
ମମେ ଛିଲ ତିଲେର ନାଡୁ
ଗାଡୁ ଥେବେ ଥେବେ କୁବ ଦୂରି ଗେଲ ବେଁକେ,
ଚେନା ଚେନା ଶୁଅ ଲାଗେ!
କେଗଥାୟ ଯେନ ଦେଖେଛି ଆଜି
ଭୋବଟେ ଭୋବଟେ ଡାକ,
ପାତୁ ଗୋପାଳ ସେ, ଅନ୍ଧାକେ ଛିନଟି ପାରଚନା ହେ?



আরি তোমার আমার বউরের দিদির ডেডুকের কালির ছেলে
তা কি সৌভাগ্য হয় এদেশে এলে ?

কথা শুনে নাটু ভাবে,
একেই তবে পাবচূড়াতে হবে

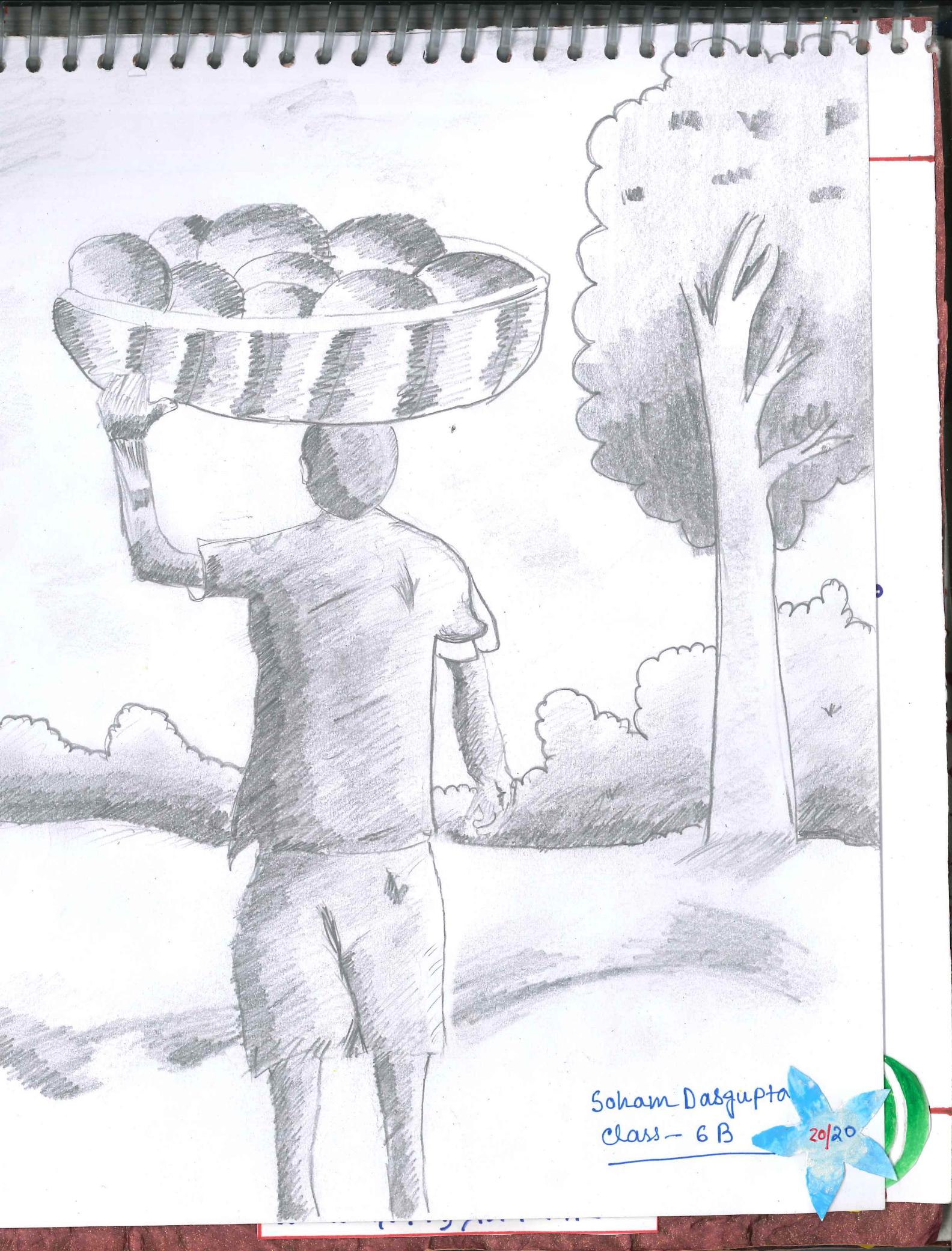
ধৈরণ করেই হোক পেটেছে যে চেনা লোক
বলল পাঁচু হঁজে এব হারিয়ে কেষে পড়েছিল এদেশে এজে
আজ্জনা নেই মানা ঢাই,
হুঁজুতে থাকি চিকাগাই
তুমি আমায় চিকাগা দেবে ?

বল কৃতি আনা গেবে ?

এই কথাটি শুনে, তাকিয়ে পাঁচুর পাতে
বলল চেনা শুঁধ, এমন ভাবে এই দেশেই পাবেনা তুমিশুঁধ
ঢাই তল্পিতলপা তোলা
দেশের পানো চলো
আমার বড়ই তাড়া ভাই
আর দাঢ়াবৰ অবস্থা নাই ।।

মুমুক্ষু মামনু
মুক্ত শেখুনি 'ম' বিজ্ঞান

১১/১৬



Soham Dasgupta
Class - 6 B

20/20

“**ବୀଳାଭାଷା ଉଚ୍ଛରିତ ହଲେ ଗୋଟେ ଦେମେ ଓହେ କାହା
ଦେବୀ ଦୂରି ; ମୋ ଆମାର ଦେବନୀ ଧୂଳିଯେ କାହିଁଦେବ
ଶୁମଶାଢ଼ାନିଯା ଦୂର୍ଦ୍ଵା କୋନ ମେ ଫୁଲୁରେ ; ମହିତାର
ଆଶୀର୍ବୀ, ଲାନୀ ବିଖାଦ ମିଶ୍ରର ଶବ୍ଦେ ହୁଲେ
ହୁଲେ ରୁମଜାନୀ ମାଁରେ ଭାଜେନ ଡାଲେଇ ବଡ଼ା, ପୋର
ପୁରୁଣେର ପ୍ରଥମ ପ୍ରତାଙ୍ଗେବୀ — ଅଲୋକିକା ଗୋଟିଏ”**

— **ବୀଳା ଭାଷା ଉଚ୍ଛରିତ ରଜା
/ ଶୋଭମୁଖ ସମାନ**





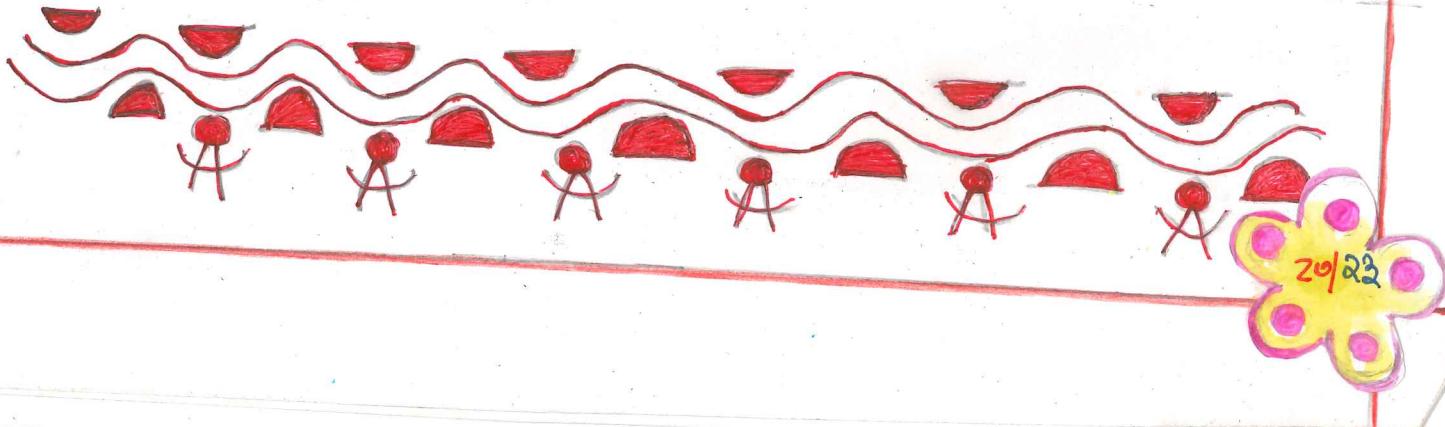
ଲେପୁକ୍ଷ୍ୟା / ଛୋଟୋଳ୍ଲ...

ପାଠସାହିତ୍ୟ, ଧୂମନ୍ଦରାହିନୀ..



पौर और भूत

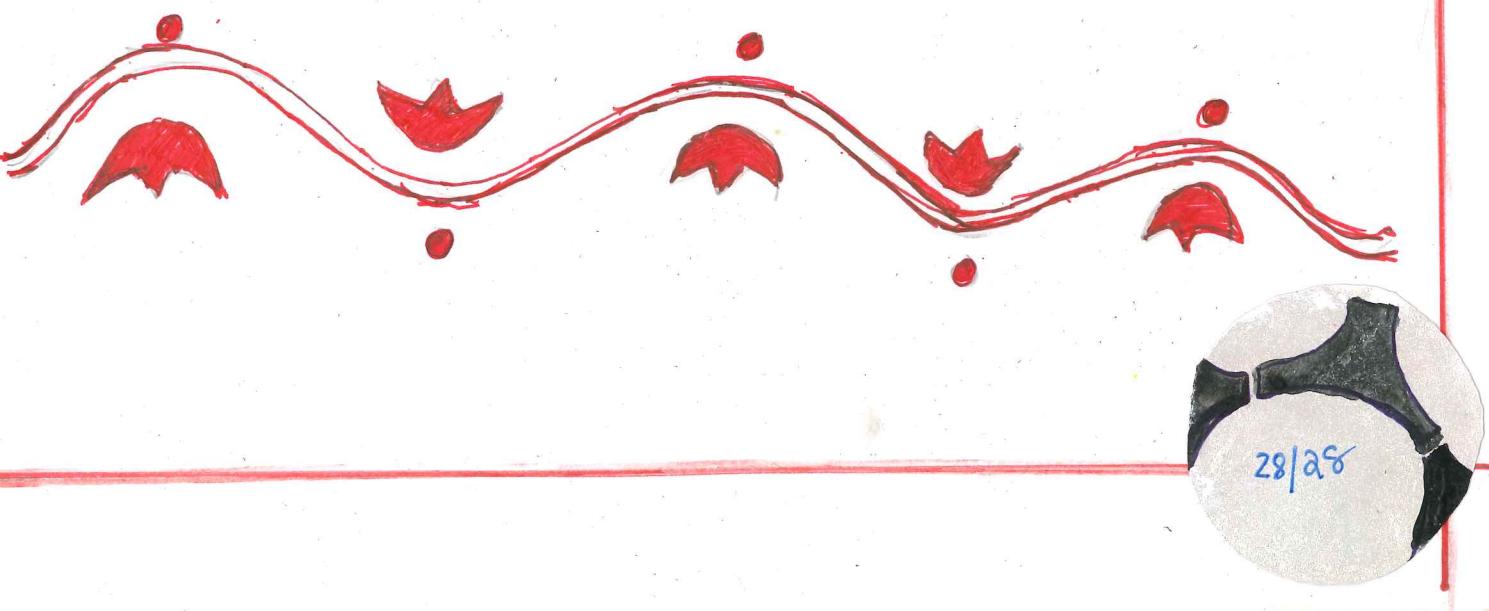
के घार की बात है, एक गाँव में एक पौर रहता था, एक नवद एक घर से गुज़र रहा था, तभी उसने एक हमण्ड की दी गाय को दुध निकालते हुए देखा। तभी उसने सोचा कि अगर वह घट दी गाय की चुरा लेगा और जूँ दुध निकालकर बेचेगा, तो उसके पास बहुत सारा सा होगा, तो वह रात की चुराने पिछे आया और बत्ती बुझने का जार किया, जैसे ही बत्ती बुझ गई, वह आसते से घर मीठर घुस गया, तभी उसने देखा कि उसको कोई पीछे बुला रहा है, तो उसने इस से पीछे देखा कि एक उसके पीछे घड़ा है। पौर ने भूत से पूछा, "तुम कौन हैं और पढ़ा क्यों आरहे हो?" तो भूत ने बोला, "मैं भूत हूँ और मैं दूसरा रात में पढ़ा घुसता हूँ लेकिन तुम पढ़ा कर रहे हो? तो पौर बोला, "मैं आज ब्राह्मण के गाय चुराने आया हूँ"। "लेकिन वह तो बहुत भारी होगा, और तुम पढ़ा तो मैं तुम्हारा मफूर करूँगा।" ऐसे पौर



ना,"तो चली मफूह करी, "लेकिन तुम्हें मुझे कृष्ण के ना
ड़ेगा,"भूत बीला, "लेकिन क्या?" और ने पुछा,
जाना"भूत बीला, "पर मैं नाञ्जगा कुटा मे?" "अगर
मैं ला सकते तो मैं मफूह नहीं करूँगा।" भूत बीला,
नहीं तुम्हें मफूह करना ही होगा," "नहीं मैं नहीं करूँगा।"
नहीं तुम्हें मफूह करना ही होगा," इतने से व्राद्धमण का
हा उठा गया और जैसे ही वह करवाज़ा खोलने राया वह
नीं भाग गए।

—वैदान्त गुप्ता

7B



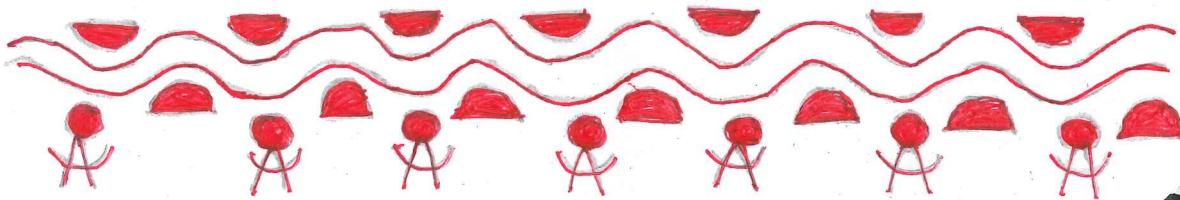


Souranshu Panda
6B

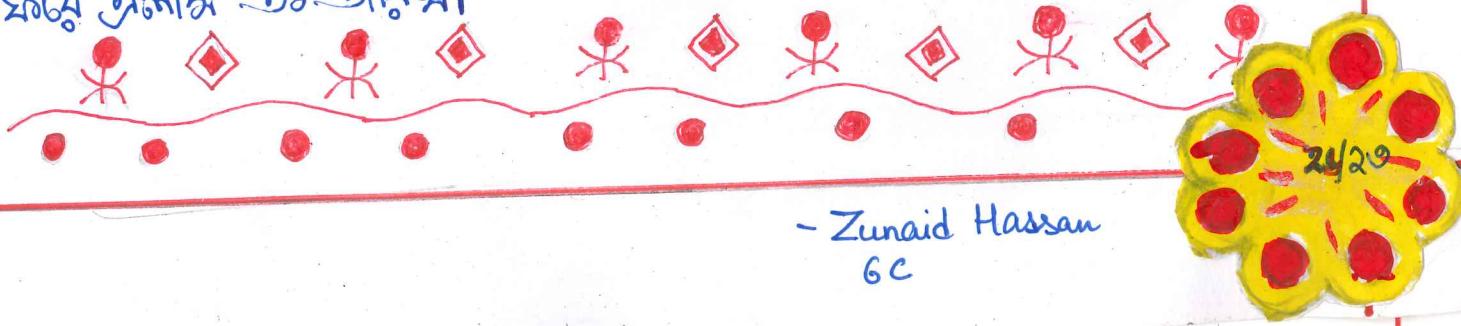
মুনে মান টাঁদের পাহাড়

মান টাঁদের কবর পিয় বই হল বিদ্রুতিত্বমণ্ড বল্দেসপর্ম্যামের 'টাঁদের পাহাড়'; এই কালজয়ী উপন্যাস শিষ্ট থেকে বুড়ো চকলের পিয়। এই গল্পের পটভূমি আধ্যাত্মিক, আধ্যাত্মিক আছে বিধ্যাত মানুষের মরুভূমি এবং তাৰই হৃত্যে আমাজনের জলে। এই গল্পে আমুৰা যে শেষমগ্নকৰ বিশ্লেষণ পাই, তা দেখে গত হয় আমুৰা ও যেন অখালে পোকে গেছি। অখালে কবচেয়ে রোমাঞ্চকৰ লাগে মরুভূমিৰ জায়গাটি, যখালে শেষৰ জীবনমুৰনেৰ জৰ্দে দুলছে। এই গল্পে একটি দীৰ্ঘকায় জন্ম আছে যাৰ নাম বুনিপ। গল্পে বুনিপ বৈতে থাকবে, কিন্তু জিনেশ্বায় বুনিপ কে শেষৰ আমুৰবে, আমুৰ মনে হয় জন্মটি এতৰ ত্যঙ্কৰ, যে জাকে কিমারা গন্তব? এই গল্পে প্রচুৰ জন্ম সানাম্ববদেৱ দেখা জালে। এদেৱবে আমুৰা বেড়ে এই চিন্তাম না, এই গল্পে আমুৰা তাদেৱ অক্ষমকে জোনাতে পাৰি। গল্পনার সুনা জোনাতে পাৰি তাদেৱ জঙ্গে টাঁদেৱ পাহাড় জিনেশ্বাটি আমুৰ দুৰহু পিয়, বিন্তু গল্পটি পজতে পজতে যে জিনেশ্বাটি মনে তৈরী হয় জোটাই আমুৰ বেশি পিয়।

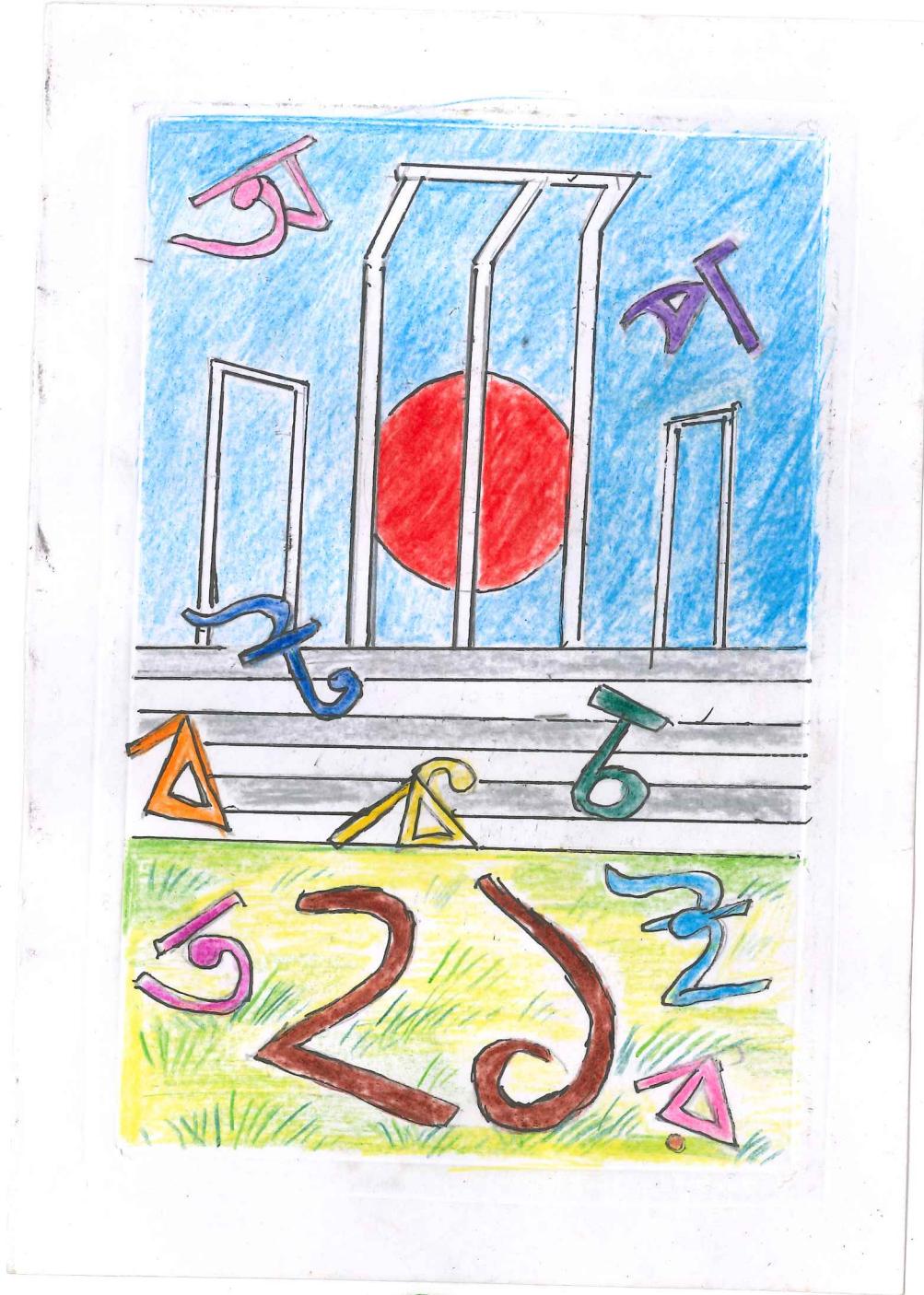
অর্হন মণ্ডন্মুৰী
মৰ্ম্ম ত্বেণী, বিভুগ-‘ক’



ମିଥିକ ଗ୍ରମନ



- Zunaid Hassan
6C



অবশ্য মনুল
ষষ্ঠি শ্রেণি ক' বিভাগ

